साहित्य अकादेमी

15 सितंबर 2013

लेखक से भेंट

के.बी. नेपाली पूर्वांचलीय नेपाली साहित्याकाश में एक स्थापित एवं सुपरिचित नाम है। व्यक्तिगत जीवन में हो या साहित्यकार के रूप में, कठिन संघर्षों के बीच, आर्थिक संकट में गुजर-बसर के साथ अपनी प्रतिभा विकसित करने की दिशा में संघर्षरत युवा पीढ़ी के लिए, अनुकरणीय आदर्श बने हैं—के.बी. नेपाली। कीचड़ में कमल खिलने वाले कथन को प्रमाणित करने के लिए के.बी. नेपाली के जीवन और कृतित्व को प्रस्तुत किया जा सकता है।

के.बी. नेपाली का मूल नाम है—खड्गबहादुर छेत्री। नेपाली साहित्य जगत में प्रवेश के बाद उन्होंने अपने नाम के अंत में 'अभागा' शब्द जोड़कर खड्गबहादुर 'अभागा' लिखना शुरू किया, पर समवांतर में वे 'के.बी. नेपाली' नाम से पहचाने जाने लगे।

के.बी. नेपाली का जन्म 16 नवंबर 1939 को तत्कालीन डिब्रूगढ़ ज़िला (वर्तमान में तिनसुकिया ज़िला) के अंतर्गत डिगबई में हुआ। उनकी माता का नाम चंद्रमाया देवी और पिता का नाम कविराज छेत्री था। पिता भारतीय तेल कंपनी में नौकरी करते थे और गौशाला के मालिक भी रहे, फिर भी के.बी. नेपाली का किशोरकाल दुःख-कष्ट में बीता।

बाल्यकाल से ही उनका झुकाव साहित्य के प्रति था। शिक्षागुरु जसुसुब्बा से प्रभावित होकर उन्होंने स्कूली जीवन में ही *नवअश्रु* नामक गीति-काव्य रच डाला। छात्रावस्था में ही अंकुरित उनका सर्जक व्यक्तित्व नेपाली साहित्य की विभिन्न विधाओं में प्रसारित हुआ। साहित्य की लगभग सभी विधाओं—कहानी, उपन्यास, नाटक, कविता, गीत, निबंध आदि में के.बी. नेपाली कलम चलाते रहे हैं। एक कुशल संपादक के रूप में भी वे एक स्थापित व्यक्तित्व हैं। उनके संपादन में *बिंदु* पत्रिका सन् 1961 से प्रकाशित हो रही है। कुछ समय तक उन्होंने लघु पत्रिका *परेली* और मासिक पत्रिका *टिपन-टापन* का संपादन भी किया और वे कोहिमा (नागालैंड) से प्रकाशित *रमिता* पत्रिका के संयुक्त संपादक भी रहे।

एक लंबे अरसे से के.बी. नेपाली मुद्रण व्यवसाय में संलग्न हैं तथा इसके माध्यम से वे अपनी मातृभाषा नेपाली और साहित्य के उत्थान के लिए भी प्रयत्नशील हैं।

के.बी. नेपाली के कहानी और उपन्यास लेखन को देखने हुए यह कहा जा सकता है कि सदा परिश्रमी और शोषित-पीड़ित खेतिहर-मज़दूर तथा नारी के प्रति वे अत्यंत सहानुभूतिशील हैं। वे शोषक वर्ग से घृणा करते हैं और रूढ़िवाद, अंधविश्वास आदि जैसे विकास के बाधक तत्त्वों का विरोध करते हैं। संस्कृति के नाम पर पुरखों से चली आ रही कु-संस्कृतियों की समाप्ति चाहते हैं वे।

कहानीकार के रूप में के.बी. नेपाली

के.बी. नेपाली अपनी पत्नी माया नेपाली के साथ

यथार्थवादी दिखते हैं। अपनी कहानियों में जीवन की व्यथा-कथा को हूबहू उतारने का प्रयास उन्होंने किया है। उनकी अधिकांश कहानियों में ग्रामीण परिवेश और निम्न वर्गों के जनजीवन की दैनंदिन समस्याओं को दिखाया गया है, जबकि यदा-कदा शहरी जीवन की कृत्रिमता को भी उन्होंने छुआ है। *कल्पना* कहानी-संग्रह की कहानियों में पारिवारिक जीवन में दिखनेवाले कंदल-कलह, प्रेमजनित मनोमालिन्य, रोटी-कपड़ा-मकान से संबंधित समस्याएँ, नारी निर्यातन जैसे समस्याओं का समाधान ढूँढ़ने के प्रयास में पीड़ितों के प्रति उन्होंने सहानुभूति प्रकट की है। दूसरे कहानी संग्रह *भोक-मृत्यु-संघर्ष* में समाहित कहानियों में वे विधवा-विवाह के हिमायती और बाल-विवाह के विरोधी दिखते हैं, इस प्रकार वे शोषित नारी जाति के प्रति अत्यंत सहानुभूतिशील हैं। नेपाली सैनिकों द्वारा देश की सुरक्षा के लिए की गई सेवा और भारतीय नागरिक के रूप में प्राप्य मातृभाषा की संवैधानिक मान्यता का भी जिक्र उनकी कहानियों में मिलता है।

के.बी. नेपाली के तीन उपन्यास—*मेरो घर मेरो संसार, समर्पण* और *तस्वीर एक रातको* भी प्रकाशित हैं। पहले उपन्यास में प्रचलित अर्थ-सामाजिक व्यवस्था में अपनी जन्मभूमि को भी छोड़ने के लिए मजबूर लाखों लोगों की व्यथा-कथा को दर्शाया गया है। उनका दूसरा उपन्यास *समर्पण* सन् 1962 के भारत-चीन युद्ध पर आधारित है। युद्ध क्षेत्र में होनेवाली सामान्य घटना से लेकर युद्ध के कला-कौशल तक के यथार्थ चित्रण ने उक्त उपन्यास को मनोग्राही बनाया है। *तस्वीर एक रातको* के. बी. नेपाली का तीसरा और नवीनतम् उपन्यास है, जिसमें स्वच्छंदतावादी प्रवृत्ति के साथ ही प्रगतिवादी स्वर भी मुखरित हुआ है। उपन्यास में वर्गद्वंद्व का प्रसंग लाना और शोषित वर्ग को शोषक वर्ग के प्रतिरोध एवं विरोध में खड़ा करना इस उपन्यास का सबल पक्ष है।

के.बी. नेपाली नाटक विधा में भी सृजनशील रहे हैं। सन् 1960 में उनके द्वारा लिखित नाटक *हिजोआज* उन्हीं के निर्देशन में सफलतापूर्वक मंचित हुआ था। उनके *शबरी विलाप* शीर्षक धार्मिक नाटक का भी मंचन हुआ था। सन् 1994 में प्रकाशित उनका नाटक *सती गोमा* धार्मिक विषयवस्तु पर आधारित है। उन्हें उनके नाटकों के लिए पर्याप्त सराहना और प्रशंसा मिली है।

के.बी. नेपाली की पहली कविता 'नेपालीका प्राण भानु' काशीबहादुर श्रेष्ठ द्वारा संपादित *उदय* पत्रिका में सन् 1961 में छपी थी और उनका प्रथम काव्य-संकलन सन् 1964 में प्रकाशित हुआ। *विरही* नामक इस कविता-संग्रह में कवि ने मूलतः अपने जीवन की विरह-व्यथा को काव्यात्मक अभिव्यक्ति

असम साहित्य सभा के अध्यक्ष कनकसेन डेका द्वारा अभिदित होते हुए के.बी. नेपाली, 2007

असम विधानसभा के अध्यक्ष प्रो. देवेश चक्रवर्ती से अभिनंदित होते हुए के.बी. नेपाली, 1995

देने का प्रयास किया है। संकलित कविताओं में कहीं प्रेम-प्रणय की बातें हैं तो कहीं राष्ट्रीय भावना के स्वर।

सन् 1984 में प्रकाशित उनके *प्लेटफर्म* शीर्षक खंडकाव्य में भारत भूमि में नेपालियों के गौरवमय इतिहास, स्वतंत्रता संग्राम में सहभागिता/आत्माहुति, स्वाधीन राष्ट्रनिर्माण में अवदान आदि का सविस्तार वर्णन है।

संगीत में भी रुचि रखनेवाले के.बी. नेपाली ने गीतों की रचना भी की है। उनके रचित गीतों का प्रसारण आकाशवाणी गुवाहाटी से हुआ है। सन् 1983 में उनका *अनुराग* नामक गीत-संग्रह प्रकाशित है। के. बी.नेपाली ने महाकवि कालिदास कृत *मेघदूत* खंडकाव्य का सन् 2004 में नेपाली भाषा में अनुवाद किया, जिसके लिए उन्हें सन् 2007 में साहित्य अकादेमी का अनुवाद पुरस्कार प्राप्त हुआ। के.बी. नेपाली की नवीनतम् पुस्तक है *केही कवि साहित्यकार र विविध लेखहरू* (2010) नामक निबंध-संग्रह। यह पुस्तक तीन खंडों में विभाजित है। प्रथम खंड में नेपाली साहित्य के तेईस शीर्षस्थ साहित्यकारों के बारे में परिचयात्मक निबंध हैं, जबकि द्वितीय खंड में साहित्य अकादेमी पुरस्कार से सम्मानित तैंतीस लेखकों के योगदान संबंधी विवरण शामिल हैं। तृतीय खंड में विविध साहित्यिक, सामाजिक, सांस्कृतिक विषयों पर लिखे उनके लेख सम्मिलित हैं। उनकी कई रचनाओं का अन्य भाषाओं में अनुवाद भी हुआ है : एक कहानी 'सपना' ओड़िया भाषा में, *प्लेटफर्म* काव्य असमिया भाषा में, 'मानिस एउटा चुहने गाग्रो' कविता बाङ्ला भाषा में, *समर्पण* उपन्यास असमिया भाषा में और एक कविता संग्रह *के.बी. नेपालीर कुरिटा कविता* शीर्षक से असमिया भाषा में। हिन्दी की पत्र-पत्रिकाओं में भी उनकी रचनाओं के अनुवाद निरंतर प्रकाशित होते रहे हैं।

के.बी. नेपाली ने असमिया और हिन्दी भाषा में भी छिट-पुट लेखन किया है। इन भाषाओं के परस्पर अनुवादक तो वे हैं ही। असमिया में *हत्याकारी* (1992) नामक उनका एक लघु उपन्यास प्रकाशित है।

के.बी. नेपाली को उनके साहित्यिक अवदान के लिए अखिल भारतीय नेपाली भाषा संघ, असम नेपाली साहित्य परिषद, बासु स्मृति प्रतिष्ठान संस्थान (काठमांडू) नेपाल के सम्मानों के साथ मदन स्मारक व्याख्यानमाला पुरस्कार, साहित्य अकादेमी अनुवाद पुरस्कार, असम साहित्य शिरोमणि सम्मान, शांति देवी सुब्बा स्मृति सम्मान आदि अनेक पुरस्कार-सम्मानों से विभूषित किया गया है।

'मदन स्मारक व्याख्यानमाला सम्मान' ग्रहण करते हुए के.बी. नेपाली।
साथ में हैं—दुर्गा प्रसाद श्रेष्ठ, कमलमणि दीक्षित, राजीव श्रेष्ठ और डॉ. हरि अधिकारी

ग्रंथ-सूची

उपन्यास

नेपाली में

मेरो घर मेरो संसार (1965)
समर्पण (1965)
तस्वीर एक रातको (1973)

असमिया में

हत्याकारी (1992)

नाटक

सती गोमा (1984)

निबंध-संग्रह

केही कवि-साहित्यकारहरू र विविध लेखहरू
—संक्षिप्त अध्ययन (2010)

अनुवाद

कालिदास कृत मेघदूत (2004)

कविता

नवअश्रु (खंडकाव्य, 1960)
विरही (कविता संग्रह, 1964)
प्लेटफर्म (काव्य, 1984)
भत्केको घर (कविता संग्रह, 1995)
अनियंत्रित मन (कविता संग्रह, 2001)
अनुराग (गीत-संग्रह, 1983)

कहानी-संग्रह

कल्पना (1970)
भोक-मृत्यु-संघर्ष (1991)

प्रमुख घटनाएँ और सम्मान

1939 : जन्म (असम के तिनसुकीया जिलान्तर्गत डिगबई में)

1956 : साहित्य यात्रा का शुभारंभ

1960 : विद्यार्थी अवस्था में *नवअश्रु* खंडकाव्य रचित

1961 : प्रथम कविता 'नेपालीका प्राण भानु' *उदय* पत्रिका में प्रकाशित

: डिगबई से लामडिंग स्थानांतरित और *बिन्दु* पत्रिका का संपादन प्रकाशन आरंभ

1962 : विवाह

1963 : अखिल भारतीय नेपाली भाषा संघ के द्वारा 'साहित्य रचना पुरस्कार' से सम्मानित

1964 : प्रथम कविता-संग्रह *विरही* का प्रकाशन

1965 : प्रथम उपन्यास *मेरो घर मेरो संसार* का प्रकाशन

1970 : प्रथम कहानी-संग्रह *कल्पना* का प्रकाशन

1983 : गीत-संग्रह *अनुराग* प्रकाशित

तत्कालीन अकादेमी अध्यक्ष गोपीचंद नारंग से
साहित्य अकादेमी अनुवाद पुरस्कार (2007) ग्रहण करते हुए।

1984 : नाटक *सती गोमा* प्रकाशित

1991 : असमिया लघु उपन्यास *हत्याकारी* का प्रकाशन

1994 : बृहत्तर गुवाहाटी भानु जयंती संघ द्वारा अभिनंदित

1995 : असम नेपाली साहित्य परिषद द्वारा सम्मानित,

: वासु स्मृति प्रतिष्ठान संस्थान, काठमांडू द्वारा अभिनंदित,

: अखिल भारतीय नेपाली भाषा समिति द्वारा 'राज्यिक नेपाली भाषा सेनानी' से सम्मानित

1997 : नेपाली साहित्य सम्मेलन, दार्जिलिंग द्वारा सम्मानित

1998 : कर्सियांग (दार्जिलिंग) से 'अरुणि' पुरस्कार द्वारा सम्मानित

2001 : दिल्ली-पानीपत जैमिनी अकादेमी से 'पद्मश्री डॉ. लक्ष्मी नारायण दुबे स्मृति' सम्मान

2004 : नेपाल के मदन स्मारक व्याख्यान माला पुरस्कार द्वारा सम्मानित

2007 : साहित्य अकादेमी अनुवाद पुरस्कार से सम्मानित

: असम नेपाली साहित्य सभा द्वारा अभिनंदित

2010 : अंतर्राष्ट्रीय नेपाली भाषा साहित्य सम्मेलन, काठमांडू से 'महाकवि देवकोटा शताब्दी सम्मान' द्वारा अभिनंदित

: निबंध-संग्रह *केही कवि साहित्यकार र विविध लेखहरू : संक्षिप्त अध्ययन* प्रकाशित।

2011 : असम क्रीड़ा एवं संस्कृति उत्सव समिति, गुवाहाटी द्वारा 'लौह पुरुष प्रेमदाकांत शर्मा स्मृति सम्मान' से सम्मानित।

2012 : अंतर्राष्ट्रीय पुरस्कार 'राज्यलक्ष्मी कार्की स्मृति सम्मान' द्वारा सम्मानित

2013 : राङभाङ समवाय साहित्य सदन, दार्जिलिंग से 'शांतिदेवी सुब्बा (प्रधान) स्मृति सम्मान' द्वारा सम्मानित

: अभि-जमान स्मृति ट्रस्ट, कुवैत से असम साहित्य शिरोमणि सम्मान' द्वारा सम्मानित।